साधना रत्नत्रयी की...

साधना रत्नत्रयीकी विनयनत हो मै करुं ।

एक लय हो एक रस हो भाव तन्मयता वरुं ।।

देव मेरे दिव्य अर्हन् श्रेष्ठ सारे लोकमें ।

साधना धन साधु मेरे सुगुरु पथ आलोकमें ।।

धर्म वह जो साधना पथ केवली उपदिष्ट है ।

आत्म निष्ठामय अमल सम्यकत्व मुझको इष्ट है ।।

शांत है आवेग सारे शांति मनमें व्याप्त है ।

मुक्त होने की हृदयमें प्रेरणा पर्याप्त है ।।

वृत्तिमें वैराग्य अन्तर्भावमें करुणा विमल ।

अटल आस्था, सभी सम्यकत्व के लक्षण सबल ।।

लक्ष्यमें स्थिरता निरंतर भक्ति भावित भावना ।

धर्म शासनकी करुं नि:स्वार्थ सतत प्रभावना ।।

जैन तत्वज्ञानमें हो सहज जिज्ञासा प्रबल ।

संघ सेवा ये सभी सम्यकत्वके भूषण अमल ।।

साधना रत्नत्रयीकी विनयनत हो मै करुं ।

एक लय हो एक रस हो भाव तन्मयता वरुं ।।